अहिंसा यात्रा प्रेस विज्ञप्ति

गतिमान ज्योतिचरण अब बढ़ चले केरल राज्य की ओर

-तीखी धूप ने दिखाया तेवर, मई-जून की गर्मी हुआ अहसास

-धूप के बावजूद महातपस्वी ने लगभग बाहर किलोमीटर का किया विहार

-के.जी.चावड़ी स्थित श्री नारायणा गुरु इंस्टीट्यूट आॅफ मैनेजमेंट पड़े आचार्यश्री के पावन चरणरज

-उपस्थित श्रद्धालुओं को आचार्यश्री ने दिया शांति का संदेश

19.02.2019 के.जी. चावड़ी, कोयम्बत्तूर (तमिलनाडु): जन-जन के मानस को पावन बनाने और लोगों को मानवता का संदेश देने के लिए निरंतर गतिमान जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ के ग्यारहवें अनुशास्ता, अखण्ड परिव्राजक, महातपस्वी, शांतिदूत आचार्यश्री महाश्रमणजी के ज्योतिचरण अब देश के एक और नए राज्य केरल की ओर बढ़ चले हैं। मंगलवार को प्रातः की मंगल बेला में आचार्यश्री ने कोवईपुदुर स्थित रतिलाल आडिटोरियम से मंगल प्रस्थान किया। विहार के कुछ मीटर बाद से ही पहाड़ दृश्यमान होने लगे। कुछ दूरी और तय करने के बाद तो पहाड़ क्रमशः नजदीक आते चले गए। पहाड़ों के कारण आज का मार्ग आरोह-अवरोह युक्त था। एक ओर नारियल, केला और स्थानीय कृषि के कारण धरती पर छाई हरियाली तो एक ओर ऊंचे पहाड़ मार्ग को प्राकृतिक सुषमा प्रदान कर रहे थे। कुछ हरियाली विहीन पहाड़ों पर वृक्षों को उगाने का प्रयास भी दिखाई दे रहा था। आज सूर्य भी मानों पूर्ण प्रखरता के साथ असामान में गतिमान था। उसकी तीखी धूप लोगों के शरीर को मानों झुलसा रही थी। धूप की तीव्रता लोगों को मई-जून महीने जैसी महसूस हो रही थी। इसके बावजूद समताधारी और दृढ़ संकल्पी आचार्यश्री निरंतर अपनी गंतव्य की ओर गतिमान थे। लगभग बारह किलोमीटर का विहार कर आचार्यश्री के.जी. चावड़ी स्थित श्री नारायण गुरु इंस्टीट्यूट आॅफ मैनेजमेंट में पधारे।

इस इंस्टीट्यूट परिसर के एक हाॅल में आयोजित मंगल प्रवचन कार्यक्रम में आचार्यश्री ने लोगों को पावन प्रेरणा प्रदान करते हुए कहा कि वर्तमान के चैबीस तीर्थंकरों में सोलहवें तीर्थंकर भगवान शांतिनाथ हुए। शांति प्राप्ति के लिए उनके नाम का जप भी किया जाता है अथवा किया जा सकता है। वे एक ही मनुष्य जन्म में चक्रवर्ती भी बने और उसी जन्म में तीर्थंकर भी बन गए। भौतिक जीवन में चक्रवर्ती का बहुत ऊंचा स्थान होता है। धन, पद, प्रतिष्ठा की दृष्टि से वह भौतिक जगत का सबसे ऊंचा पद है। वे पहले चक्रवर्ती बने और फिर जब साधुपन पाला तो अध्यात्म जगत के सबसे ऊंचे पद तीर्थंकरत्व को भी प्राप्त किया। अध्यात्म जगत में तीर्थंकर से मानों कोई बड़ा नहीं हो सकता। वे साधना जगत के मानों शिखर पुरुष बन गए। तीर्थंकर बनने के लिए मोहनीय कर्म को क्षीण करना होता है। जो तीर्थंकर होते हैं, वे पूर्णतया शांति में होते हैं। उनके मोहनीय कर्म का बंधन क्षीण हो चुका होता है। साधना जगत में भगवान शांतिनाथ ने सर्वोच्च स्थान प्राप्त किया। इसलिए आदमी को शांति रखने का प्रयास करना चाहिए।

आदमी को अपने जीवन में शांति रखने का प्रयास करना चाहिए। आदमी को स्वयं शांति में रहना चाहिए और दूसरों को भी शांति में रहने देने का प्रयास करना चाहिए। आदमी भौतिक सुख-सुविधाओं के अभाव में भी मन में शांति रखने का प्रयास करे। आदमी को ऐसा अभ्यास रहना चाहिए कि प्रत्येक स्थिति में आदमी के मन में शांति रहना चाहिए। जो आदमी दूसरों को चित्त समाधि अथवा शांति देने का प्रयास करता है, वह मानों खुद के लिए शांति तैयार कर रहा होता है और जो दूसरों को दुःख, कष्ट अशांति आदि देने का प्रयास करता है, वह स्वयं के लिए अशांति तैयार कर लेता है। इसलिए आदमी को शांतिमय जीवन जीने का प्रयास करना चाहिए और अपनी आत्मा का कल्याण करने का प्रयास करना चाहिए।